

Types of Bank Loans in India | भारत में बैंक लोन कितने प्रकार के होते हैं?

© continuegyan.com/types-of-bank-loans-in-india



किसी चीज को खरीदने के लिए या किसी जरुरी काम को करने के लिए, बिज़नेस को बढ़ाने के लिए या किसी पर्सनल काम के लिए बैंक या किसी फाइनेंसियल इंस्टिट्यूट से ली जाने वाली फाइनेंसियल हेल्प को ही लोन या फिर कर्ज़ कहा जाता है। जिसके बदले में कस्टमर बैंक या फाइनेंस कंपनी को EMI यानि किश्त के रूप में लोन की पूरी राशि ब्याज के साथ वापस कर देते हैं।

बैंक लोन कितने तरह के लोन होते हैं?

टाइम पीरियड के हिसाब से लोन तीन तरह के होते हैं—

1. **Short-term Loan:** इसमें पैसे लौटाने का समय 1 साल से कम का होता है।
2. **Medium-term Loan:** मीडियम टर्म लोन में पैसे 3 से 5 साल के अंदर लौटाने होते हैं।
3. **Long-term Loan:** 5 साल से ज्यादा के लिए होते हैं जैसे होम लोन।

चलिए अब देखते हैं कि भारत में बैंक और फाइनेंसियल कंपनी में कितने तरह के लोन उपलब्ध हैं ग्राहकों के लिए।

1) Personal Loan

पर्सनल लोन या गैर ज्ञानती लोन का मतलब होता है खुद के लिए लिया गया लोन। वैसे तो लोन सब खुद के लिए ही लेते हैं लेकिन पर्सनल लोन का मतलब होता है कि अपने पर्सनल काम के लिए लोन लेना जैसे कि इलाज करना हो या किसी को कोई महंगी गिफ्ट देना हो, बच्चों के स्कूल की फीस भरनी हो या फिर घर का

कोई सामान खरीदना हो।

पर्सनल लोन के लिए हर बैंक की अपनी-अपनी व्याज दर तय होती है जैसे आज की तारीख में पर्सनल लोन के लिए स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (SBI) 12% से लेकर 16% तक सालाना व्याज वसूल रहा है, तो HDFC बैंक 11% से लेकर 20% तक सालाना वसूल रहा है।

ये भी जान लेना जरूरी है कि पर्सनल लोन की व्याज दर दूसरे लोन के मुकाबले ज्यादा होती है। वैसे बैंक आपको पर्सनल लोन देते समय ज्यादा डॉक्यूमेंट नहीं मांगते हैं वो बस आपकी सैलरी स्लिप देखते हैं और लोन को जारी कर देते हैं, यह भी बता दे कि पर्सनल लोन आपको 5 साल तक के लिए भी मिल सकता है।

2) Gold Loan

गोल्ड लोन बैंक में सोना गिरवी रखने के बाद कैश लेने वाला प्रोसेस होता है, आपको अपना सोना और जेवर बैंक के लॉकर में रखना पड़ता है। इस तरह के लोन आपको जमा की गयी सोने की गुणवत्ता और उसकी कीमत के आधार पर मिलते हैं।

ऐसा देखा गया है कि बैंक आपको जमा किये गए सोने की कीमत के 80% तक लोन दे देते हैं। गोल्ड लोन आमतौर पर लोग अपने इमरजेंसी काम को पूरा करने के लिए लेते हैं, इस लोन पर लिया जाने वाला व्याज दर पर्सनल लोन की तुलना में काफी कम होता है। आज की तारीख में स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (SBI) गोल्ड लोन पर 11% इंटरेस्ट वसूल रहा है जबकि HDFC बैंक गोल्ड लोन पर 10% व्याज ले रहा है।

3) Loan Against Security

मतलब सिक्योरिटी के बदले में मिलने वाला लोन, इसमें बैंक आपके सिक्योरिटी पेपर को रखने के बाद लोन देता है। अब सवाल ये उठता है कि सिक्योरिटी पेपर क्या होते हैं?

अगर आपने Demat, Share, Mutual Funds, Insurance Scheme या Bond में पहले से ही इन्वेस्ट किया हुआ है तो यही आपके सिक्योरिटी पेपर्स होते हैं और इसके बदले में बैंक आपको लोन दे देता है क्योंकि इन पेपर्स की वैल्यू होती है।

आप अगर लोन चुकाने में असमर्थ हो जाते हैं तो बैंक आपके सिक्योरिटी पेपर को जब्त कर लेता है और बाजार में बेच देता है। आप इन सिक्योरिटी पेपर को बैंक में गिरवी रख सकते हैं, बैंक आपके सिक्योरिटी पेपर के आधार पर ओवरड्राफ्ट की सुविधा देता है।

ओवरड्राफ्ट का मतलब होता है कि जितने पैसे आपके बैंक अकाउंट में है उससे ज्यादा पैसे मिकालने की सुविधा, अगर आपके अकाउंट में शुन्य बैलेंस है तब भी आप अपने अकाउंट से पैसे मिकाल सकते हैं इसी को ओवरड्राफ्ट कहा जाता है।

4) Property Loan

प्रॉपर्टी लोन वो लोन होता है जिसमें बैंक आपकी प्रॉपर्टी के कागजात गिरवी रख कर लोन देता है, ये ज्यादा से ज्यादा 15 साल तक के लिए मिल सकता है। आमतौर पर प्रॉपर्टी की जो कीमत होती है उसका 40 से 60% तक लोन मिल जाता है।

5) Home Loan

घर खरीदने के लिए जो लोन लिया जाता है वो होम लोन कहलाता है। आप सिर्फ घर बनाने के लिए ही लोन नहीं लेते हैं बल्कि घर बनाने की कीमत, मकान का रजिस्ट्रेशन, स्टाम्प डचूटी वगैरह के खर्चों को जोड़कर बैंक से लोन ले सकते हैं।

होम लोन कैसे ले?

बैंक आपके खर्चों का कुलराशि से 75 से 80% तक लोन दे सकती है, बाकी पैसों का जुगाड़ घर बनाने के लिए आपको खुद ही करना होता है। मान लीजिये आपने एक प्लॉट के लिए लोन लिया जिसकी कीमत 6 लाख है तो आप बैंक को सिर्फ 6 लाख का 30% यानि कि 1 लाख 80 हजार देंगे और बाकी की रकम आप धीरे-धीरे चुकाते रहेंगे।

होम लोन चुकाने का समय 5 साल से लेकर 20 साल तक हो सकता है। होम लोन की शर्तों में ब्याज के अलावा कुछ फीस भी शामिल होती है जैसे प्रोसेसिंग फीस, Administrative Charges, Legal Fees, Assesment Fees वगैरह। होम लोन के प्रकार और भी होते हैं इनके बारे में अगले पोस्ट में बात करेंगे।

6) Education Loan

हर स्टूडेंट के नसीब में नहीं होता है कि वो अपने मनचाहा यूनिवर्सिटी में पढ़ाई कर पाए, कोई ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में पढ़ाई करना चाहे तो उसे पैसे की दिक्कत आ सकती है। वहां की फीस ही इतनी है कि वहां जाकर पढ़ाई करने के बारे में सोचना ही काफी मुश्किल काम है ऐसी स्थिति में वो स्टूडेंट बैंक में एजुकेशन लोन के लिए Apply कर सकता है।

बैंक एजुकेशन लोन देने से पहले उसकी Repayment Sure करता है। देखा गया है कि एजुकेशन लोन सिर्फ उन्हीं स्टूडेंट्स को दिया जाता है जो इसे वापस करने की क्षमता रखते हैं।

स्टूडेंट्स की आर्थिक क्षमता की जांच बैंक दो तरह से करते हैं या तो उनके परिवार के इनकम को देखा जाता है या फिर लोन लेने वाले स्टूडेंट किस यूनिवर्सिटी में जा रहे हैं, वहां से पढ़कर वो कमाएंगे या नहीं कमाएंगे वहां कैपस सिलेक्शन का रेश्यो (Ratio) क्या है ये सब देखने के बाद ही बैंक लोन को जारी करते हैं।

पढ़ाई खत्म होने के बाद स्टूडेंट लोन को Repayment कर सकता है। एजुकेशन लोन लेने के लिए एक गारंटर की भी ज़रूरत पड़ती है, गारंटर लोन लेने वाले का अभिभावक (Guardian) या फिर कोई रिटेलर भी हो सकते हैं। आज की तारीख में स्टेट बैंक ऑफ इंडिया 7.5 लाख से ऊपर के लोन के लिए 10.70% और 7.5 लाख से कम के लोन के लिए 9.95% इंटरेस्ट या ब्याज चार्ज कर रहा है।

7) Car Loan

बैंक अक्सर कार खरीदने के लिए लोन के तौर पर तरह-तरह के स्कीम देते रहते हैं। ये लोन बाकी दूसरे लोन की तरह ही अलग-अलग समय के लिए Fixed या फिर Floating रेट पर दिए जाते हैं।

Fixed रेट का मतलब होता है Fixed Interest Rate, जब आप लोन ले रहे होते हैं तो उस समय जो ब्याज दर लागू होती है वही ब्याज दर पूरे लोन को चुकाने तक लागू रहती है।

Floating Rate वो होता है जो समय आने पर बदल भी सकता है, कम या ज्यादा भी हो सकता है और उसी के अनुसार आपके लोन का इंटरेस्ट रेट कम या ज्यादा होता रहता है।

बैंक आपको लोन देने से पहले ही पूछ लेते हैं कि आप फिक्स्ड रेट पर लोन लेना चाहते हैं या फिर फ्लोटिंग रेट पर लोन लेना चाहते हैं। ये भी जान ले जब तक लोन का पूरा पेमेंट नहीं हो जाता है तब तक कार का मालिकाना अधिकार लोन देने वाले बैंक का ही होता है।

आपको बैंक में अपनी सैलरी स्लिप और पिछले दो या तीन साल का इनकम टैक्स रिटर्न जमा करना पड़ सकता है इसके अलावा कोई आईडी प्रूफ और एड्रेस प्रूफ जमा करना होता है। नयी कारों के लिए इंटरेस्ट रेट और दूसरे चार्ज सेकंड हैंड कारों से अलग होते हैं।

8) Corporate Loan

बैंक जब बड़े खिलाड़ियों जैसे नीरव मोदी, विजय माल्या, अम्बानी, टाटा, विरला वगैरह या कोई कंपनी को लोन मुहैया कराता है तो उसे कॉर्पोरेट लोन कहते हैं।

पहले के नियमों के अनुसार बैंक अपनी कोर कैपिटल का 55% तक किसी एक बड़ी कंपनी को लोन दे सकते थे लेकिन हाल ही में हुए डिफॉल्टर केस में बढ़ोतरी को देखते हुए RBI ने 1 जनवरी 2019 से ऐसा नियम लागू कर दिया जब बैंक किसी कॉर्पोरेट ग्रुप को अपनी कोर कैपिटल का सिर्फ 25% तक ही लोन दे सकेंगे जिससे इस तरह की जोखिम से बचा जा सके।

आज आपने जाना कि भारत में बैंक लोन के प्रकार कितने होते हैं, ये प्रमुख लोन हैं जो दिए जाते हैं बैंकों के द्वारा इसके अलावा भी कई सारे अन्य लोन स्कीम भी उपलब्ध हैं जो कुछ छोटी-बड़ी कंपनियों के द्वारा दिया जाता है।

जैसे अगर आपको मोबाइल, लैपटॉप, टीवी, फ्रिज इत्यादि खरीदना हो तो Bajaj Finserv आपको लोन मुहैया करा देता है 0% इंटरेस्ट में पर हाँ कुछ प्रोसेसिंग फीस जरूर लेते हैं। **Types of Bank Loans in India** पोस्ट पसंद आने पर इसे शेयर कर मेरी मदद जरूर करे, धन्यवाद। ..
